12 / 01 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

बालक सो मालिक बनने वालों के तीनों कालों का साक्षात्कार की अनुभूतियाँ

➢➢ त्रिकालदर्शी शिव बाबा और बालक सो मालिक बनने वालों का मिलन

➳ _ ➳ भृकुटी के अकाल तख्त पर विराजमान मै ग्यानी तू आत्मा हूँ

→ आदिकाल मध्यकाल औरभक्तिकाल समाप्त हो गया... अब भक्ति का फल... ग्यान सागर और ग्यान की प्राप्ति करते करते ग्यानी तू आत्मा बन गयी

→ सारे भक्ति के संस्कार अंश सहित समाप्त

→ अधीनता के संस्कार, मांगने के संस्कार, पुकारने के संस्कार अंश dahit समाप्त.

→ अब मै बाप समान गुण, कर्तव्य और सेवा में अपनी प्रालब्ध श्रेष्ठ बनाती जा रही हूँ.. मेरे तीनो काल श्रेष्ठ बनते जा रहे हैं...बालक सो मालिक बनती जा रही हूँ

■ मै ग्यानी तू आत्मा.. gyan सागर की लहरों में समाती जा रही हूँ

→ इच्छा मात्रम अविद्या बन गयी

→ सर्व प्राप्ति स्वरूप बन गई

➳ _ ➳ बुद्धि में ग्यानी तू आत्मा का चित्र खींचती जा रही हूँ.

→ गोपी वल्लभ की गोपिका बन स्नेह में समाती जा रही हूँ

→ ताज, तख्त तिलकधारी का शृंगार जन्मते ही प्राप्त हो गया

→ एवर हेल्धी, वेल्धी और हैप्पी सबमें सम्पन्न बनती जा रही हूँ

■ मै संगम युगी ब्राह्मण अभी बाबा के दिलतख्तनशीन हूं

➳ _ ➳ सर्व प्राप्तियों का अनुभव कर रही हूं जो. मेरा भविष्य का चित्र हैं..

→ संगम के अंतिम स्टेज पर ताज तख्त तिलक की अधिकारी बन साक्षात्कार मूर्त बनती जा रही हूँ..

→ मायाजीत प्रकृति जीत बन रही हूँ.

→ बापदादा द्वारा मिले हुए सर्व खाजानो की मालिक हूँ

■ डबल ताजधारी हूं, डबल तख्त धारी और सर्व प्राप्ति सम्पन्न आत्मा हूं

➳ _ ➳ हीरे जैसा जीवन वाली आत्मा हूं

→ संगम पर माशूक मेरा सोलह शृंगार कर मुझे शृंगारी मूर्त बना रहा हैं..

→ भविष्य शृंगार इसके आगे कुछ भी नहीं वहां दासियां शृंगार करेगी

→ अब यहां स्वयं ग्यानदाता बाप शृंगारता हैं

→ वहा सोने हीरे के झूले में झूलेंगे और अभी बापदादा की गोदी में झूलते हैं, अतिन्द्रिय सुख के झूले में झूलते हैं..

■ यह श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ चित्र सदा सामने स्मृति में रखती हूँ..

➳ _ ➳ यह मेरा ग्यानी तू आत्मा का चित्र सदा, निरंतर मेरी स्मृति पटल पर ईमर्ज रहता हैं..

→ यह चित्र संपूर्ण तैयार हुआ और

→ भक्त लोग मुझ सम्पूर्ण सम्पन्न मूर्ति का दर्शन करने भीड़ में खड़े हैं..

→ समय को भूल, स्वयं को देख चित्र बनाने वाली आत्मा हूं..

■ त्रिकालदर्शी बन तीनो कालों को जानने वाली आत्मा हूं

➳ _ ➳ सम्पन्न मूर्त आत्मा हूं

➳ _ ➳ दर्शनीय मूर्त आत्मा हूं

➳ _ ➳ बाप समान गुण मूर्त आत्मा हूं

➳ _ ➳ स्मृति दिवस मनानेवाली आत्मा हूं..

→ स्मृति दिवस का यादगार हैं शांति स्तंभ पवित्रता का स्तंभ, शक्ति स्तंभ बन सारे विश्व को दर्शन करानेवली आत्मा हूं..

→ असंभव को संभव करनेवाली आत्मा हूं

→ स्मृति स्वरूप समर्थ स्वरूप मनाने वाली आत्मा हूं

■ हर कदम में पदमों की कमाई कर पद्मापदम पति बनने का अनुभव करनेवाली आत्मा हूँ